यौमे आ़शूरा की बिदअ़त व खुराफ़ात

(10 मुह़र्रमुल ह़राम को नबीयों के वाक़ेआ़त, सूरमा लगाना, नए कपड़े पेंहनना, खाने-पीने में वुसअ़त जैसे बा'ज़ आमाल का तेहक़ीक़ी जाएज़ा)

मुरत्तिब

दीवान मोहसिन शाह

रस्मुलखत हिन्दी

डो. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन
(अहले सुन्नत)

यौमे आ़शूरा की बिदअ़त व खुराफ़ात

(10 मुह़र्रमुल ह़राम को नबीयों के वाक़िआ़त : सूरमा लगाना, नए कपड़े पेहेनना, खाने-पीने में वुसअ़त जैसे बा'ज़ आमाल का तेहक़ीकी जाएज़ा)

तालीफ़

दीवान मॉहसिन शाह

रस्मुलख़त हिन्दी

डो. शहज़ाद हुसैन क़ाज़ी

:: नाशिर ::

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अेहले सुन्नत)

किताब का नाम : **यौमे आ़शूरा की बिदअ़त व ख़ुराफ़ात**

तालीफ़ : **दीवान मोहसिन शाह**

रसमुल ख़त हिन्दी : **डॉ. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी**

सफ़हात : **40**

सने इशाअत : **1 मुहर्रम, 1441 हिजरी ; 1 सितंबर, 2019**

कम्पोज़िंग : इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अेहले सुन्नत),
मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अेहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

+91 85110 21786

फेहरिस्त

यौमे आ़शूरा की बिदअ़त व खुराफ़ात
(अर्ज़े नाशिर)

अल्लाह ﷻ ! के नाम से शुरु के जो बड़ा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल है ।

पिछले कई बरसों से अॅह्‍ले सुन्नत में यौमे आ़शूरा के फज़ाईल को लेकर Pamphlete पब्लिश किए जाते है यहां तक के मुहर्रम के चांद के बाद की जुम्आ में ख़तीब भी इस मौज़ू पर तकरीर कर रहे होते है, ये रिवायतें अवाम में हवा की तरह फैल चूकी है जैसे के,

यौमे आ़शूरा के दिन -

* सूरमा लगाना
* गुस्ल करना
* मेहंदी लगाना
* खिचड़ा पकाना
* नए लिबास पहनना
* खुशी व इन्बिसात का इज़्हार करना
* खाने पीने में वुसअ़त इख़्तियार करना वगैराह आमाल को सवाब की निय्यत से करना अफ़ज़ल माना जाता है ।
* इसी तरह येह भी बयान किया जाता है के आ़शूरा के दिन सिर्फ करबला का ही वाक़िआ नहीं हुआ बल्कि दीगर वाक़िआत भी हुवे है । जैसे के अल्लाह ﷻ ने,
  - हज़रत आदम عليه السلام की तौबा कुबूल फ़रमाई ।
  - हज़रत नूह عليه السلام की कश्ती जुदी पहाड पर काईम हुई ।
  - हज़रत इब्राहिम عليه السلام को आग से नजात मिली ।
  - हज़रत इस्माईल عليه السلام के ज़ब्ह के वक़्त दुम्बा का फिद्या आया ।
  - हज़रत याक़ूब عليه السلام के पास हज़रत युसूफ عليه السلام वापस आए ।
  - हज़रत याक़ूब عليه السلام को अल्लाहने बसारत (बिनाई) वापस फ़रमाई ।

- हज़रत दाउद ﷺ की लग़ज़ीस मु'आफ़ हुई ।
- हज़रत अय्युब ﷺ से बलाओं को दूर किया गया ।
- हज़रत युसूफ ﷺ को जेलख़ाने से निकाला गया ।
- हज़रत मूसा ﷺ पर तौरेत उतारी गई ।
- हज़रत इदरीस ﷺ को बलन्द मरतबे पर फाईज़ किया ।
- हज़रत युनूस ﷺ को मछली के पेट से निकाला ।
- हज़रत जिब्रईल ﷺ को पैदा किया ।
- फिरिश्तों कों पैदा किए ।
- हज़रत आदम ﷺ को पैदा किया ।
- हज़रत इब्राहिम ﷺ को पैदा किया ।
- यौमे आ़शूरा को क़यामत काइम होगी वगैराह ।

* दरअस्ल ये रिवायात नासबी व ख़्वारज़ीओंने अॅह्ले बैत की दुश्मनी में 10 मुहर्रम यौमे आ़शूरा को ज़िक्रे शहादते हुसैन इब्ने अ़ली ﷺ को कम करने, उसकी अहमियत घटाने के लिए घड़ी है **ता'के लोगों को ये बताया जाए के 'यौमे आ़शूरा 10 मुहर्रम सिर्फ निस्बते हुसैन ﷺ की वजह से नहीं बल्के और फ़ज़ाइल व वाक़िआ़त से भी मशहूर है ।'** और लोगों के दिमाग में ये रिवायातें डाल कर लोगों का ध्यान ज़िक्रे शुहदाए करबला से कम करने की कोशिश हो रही है ।
* अॅह्ले सुन्नत के मुहद्दिषीन का इन रिवायातों के बारे में क्या हुक्म है वो हमारे अज़ीज़ दोस्त **'मोहसीन शाह दीवान'** ने बख़ूबी इस किताबचे में बयान किया है, ता'के अह्ले सुन्नत की अवाम ऐसी मौज़ूअ़ व ज़ईफ़ रिवायातों से ख़ुद की हिफ़ाज़त कर शके । अफसोस की बात तो येह है के ख़ुद को आलिम केहलानेवाले अॅह्ले इल्म भी मुहर्रम में इसको ज़ोर व शोर से बयान करते है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत अता करे । आमीन...

'इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्ड़ेशन' के जानिब से इस किताब को पब्लिश कर के मुहब्बते अॅह्ले बैत में जो काविश की गई है उसे अल्लाह ﷻ क़ुबूल फ़रमाये ।

डॉ. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी

1 मुहर्रम, हिजरी 1441

1 सप्टेम्बर, 2019

मुफ़्तीए मक्का मुकर्रमा शैख़ुल फ़ुक़हा वल मुहद्दिषीन इब्ने हजर अल हैतमी अल मक्की अश्शाफ़िई رحمة الله عليه का फ़तवा ‘सवाइक़े मुहर्रिक़ा’ से

الصواعق المحرقة
على
أهل الرفض والضلال والزندقة

تأليف
أبي العباس أحمد بن محمد بن محمد بن علي
ابن حجر الهيتمي (٩٧٣)هـ

تحقيق
عبد الرحمن بن عبد الله التركي
كلية أصول الدين بالرياض
كامل محمد الخراط

الجزء الأول

دار الوطن
الرياض ـ شارع المعذر ـ ص . ب ٣٣١٠
٤٧٩٢٠٤٢ ـ فاكس ٤٧٦٤٦٥٩

عاشوراء كما سيأتي بَسطُ قصته إنما هو الشهادة الدالة على مَزيد (١) حظوته ورفعته ودَرجته عند الله ، وإلحاقه بدرجات أهل بيته الطاهرين ، فمن ذكر ذلك اليوم مصابه لم يَنبغ أن يشتغل إلا بالاسترجاع امتثالاً للأمر ، وإحرازًا لما رتبه تعالى عليه بقوله : ﴿ أولئكَ عليهم صَلواتٌ من رَبهم ورَحمة وأولئك هُمُ المهتدون﴾ [البقرة: ١٥٧] ، ولا يشتغل ذلك اليوم إلا بذلك ونحوه من عظائم (٢) الطاعات كالصوم ، وإياه ثم إياه أن يَشغله بِدَع الرافضة من النَّدب والنِّياحة والحُزن ، إذ ليس ذلك من أخلاق المؤمنين ، وإلا لكان يوم وَفاته (ﷺ) أولى بذلك وأحرى ، أو بدع الناصبة المتعصبين على أهل البيت ، أو الجهال المقابلين الفاسدَ بالفاسد ، والبدعةَ بالبدعة ، والشر بالشر من إظهار غاية الفرح والسرور واتخاذه عيدًا ، وإظهار الزينة فيه كالخضاب والاكتحال ، ولبس جَديد الثياب ، وتوسيع النفقات ، وطَبخ الأطعمة والحبوب الخارجة عن العادات ، واعتقادهم أن ذلك من السنَّة والمعتاد ،والسنَّةُ تركُ ذلك كله ، فإنه لم يرد في ذلك شيء يُعتمد عليه ، ولا أثر صحيح يرجع إليه (٣) .

وقد سُئل بعضُ أئمة الحديث والفقه عن الكُحل والغُسلِ والحِنَّاء ، وطَبخ الحبوب ، ولُبس الجديد ، وإظهار السرور يوم عاشوراء ، فقال : لم يَرِد فيه حديثٌ صحيح عنه (ﷺ) ، ولا عن أحدٍ من أصحابه ، ولا استحبه أحد من أئمة المسلمين، لا من الأربعة ، ولا مِن غيرهم ، ولم يرد في الكتب المعتمدة في ذلك لا صَحيح ولا ضعيف ، وما قيل : « إن من اكتحل يومه لم يرمد ذلك العام ، ومن

(١) ليست في (ط) .
(٢) في (ك) : « عظيم » .
(٣) في (ط) : « له » .

اغتسل لم يمرض كذلك ، ومن وسع على عياله فيه وسَّع الله عليه سائر سنته » ، وأمثال ذلك مثل فضل الصلاة فيه ، وأنه فيه توبةُ آدم ، واستواءُ السفينة على الجودي، وإنجاءُ إبراهيم من النار ، وإفداءُ الذَّبيح بالكَبش ، وردُّ يوسفَ على يَعقوب؛ فكل ذلك موضوعٌ إلا حديث التَّوسعة على العيال [1] -لكن في سنده من تُكلم فيه- فصار هؤلاء لجهلهم يتخذونه موسمًا ، وأولئك لرفضهم [2] يتخذونه مأتمًا ، وكلاهما مُخطئ ، مُخالف للسنة ، كذا ذكر ذلك جميعه [3] بعض الحفاظ .

وقد صرح الحاكم بأن الاكتحال يومه بدعة ، مع روايته خبر : « إنَّ مَن اكتحل بالإثمد يومَ عاشوراء لم تَرمَد عينُه أبدًا » [4] ، لكنه قال : إنه منكر ، ومن ثم أورده ابن الجوزي في « الموضوعات » من طريق الحاكم . قال بعض الحفاظ : ومن غير تلك الطريق ، ونقل المجد اللغوي عن الحاكم أن سائر الأحاديث في فضله - غير الصوم وفضل الصلاة فيه والإنفاق، والخضاب ، ، والادِّهان والاكتحال، وطبخ الحبوب وغير ذلك ــ كله موضوع ومُفترى . وبذلك صرَّح ابن القيِّم أيضًا،

---

(١) سيأتي في الصفحة التالية .

(٢) في (ك) : « الرافضة » .

(٣) تحرفت في (ك) إلى : « جماعة » .

(٤) ذكره الفُتني في « تذكرة الموضوعات » : ١١٨ ، والقاري في « الأسرار المرفوعة » : ٣٣٢، وابن عراق الكناني في « التنزيه » ١٥٧/٢ ، عن ابن عباس ، والزيلعي في « نصب الراية » ٤٥٥/٢-٤٥٦ ، ونسبه للبيهقي في « الشعب » ،وقال : قال البيهقي : إسناده ضعيف بمرة، فجويبر ضعيف ، والضحاك لم يلق ابن عباس ، انتهى . ومن طريق البيهقي رواه ابن الجوزي في «الموضوعات» ، ونقل عن الحاكم أنه قال فيه : حديث موضوع ، وضعه قتلة الحسين رضي الله عنه . ولم نجده في « المستدرك » .

فقال: حديثُ الاكتحال ، والادهان، والتطيب يوم عاشوراء من وَضع الكذابين، والكلام فيمن خَصَّ يوم عاشوراء بالكُحل ، وما مر من أن التوسعة فيه لها أصل هو كذلك فقد أخرج حافظ الإسلام الزين العراقي في « أماليه » من طريق البَيهقي، أن النبي (ﷺ) قال : « مَن وَسَّع على عياله وأهله يوم عاشوراء ، وَسَّعَ الله عليه سائر سَنته » [1] . ثم قال عقبه : هذا حديث في إسناده لين ، لكنه حسن على رأي ابن حبان [2] ، وله طريق آخر صححه الحافظ أبو الفَضل محمد بن ناصر، وفيه زيادات منكرة . وظاهر كلام البَيهقي أن حديث التوسعة حسن [3] على رأي غير ابن حبان أيضًا ، فإنه رواه من طرق عن جماعة من الصحابة مرفوعًا ثم قال : وهذه الأَسانيد ، وإن كانت ضعيفةً لكنها إذا ضم بعضها إلى بعض أحدثت قوة ، وإنكار ابن تَيمية أن التوسعة لم يرد فيها شيء عنه (ﷺ) وَهْمٌ، لما علمت، وقول أحمد : إنه حديث لا يصح . أي : لذاته ، فلا ينفي كونه حسنًا لغيره ، والحسن [4] لغيره يحتج به ، كما بُيِّنَ في علم الحديث [5] .

---

(١) أخرجه الطبراني في الكبير ٩٤/١٠ ، عن ابن مسعود رضي الله عنه ، وابن عدي في « الكامل» ٢١١/٥، وسندهما فيه الهيصم بن شداخ . وابن الجوزي في « العلل المتناهية » ٦٢/٢-٦٣ ، عن أبي هريرة ، والعقيلي في « الضعفاء » ٦٥/٤ ، وأورده الهيثمي في المجمع ١٨٩/٣ ، عن أبي سعيد الخدري عن ابن مسعود . وقال عقيبه : رواه الطبراني في الكبير ، وفيه الهيصم بن الشداخ، وهو ضعيف جدًا . وللعلماء كلام طويل حول هذا الحديث ، فليراجع فيه « المقاصد الحسنة » : ٤٣١ ، و « اللآلىء المصنوعة » ١١١/٢- ١١٤ ، و « تنزيه الشريعة » ١٥٧/٢ ، و«فيض القدير » ٢٣٥/٦ ، و « كشف الخفا » ٢٨٤/٢ ، و« الفوائد المجموعة » : ٩٨ .

(٢) في (ط): « غير ابن حبان » .

(٣) ليست في (ك) .

(٤) ساقطة من (ك) .

(٥) المؤلف هنا عمم وأطلق -رحمه الله- والحسن لغيره ، هو الضعيف إذا تعددت طرقه ، =

मुफ़्तीए मक्का मुकर्रमा और अपने ज़माने के शैख़ुल फ़ुक़हा वल-मुहद्दिषीन शैख़ शिहाबुद्दीन अबी अल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अ़ली इब्न हजर अल हैतमी अल मक्की अश्शाफ़िई ﷺ (अल मुतवफ्फा : सन 973 हिजरी) अपनी किताब 'सवाईक़े मुहर्रिका' में आ़शूरा के रोज बुग्ज़े अ़ॅहले-बैते अत्हार ﷺ में की जानेवाली नवासिबो ख़्वारिज की बिदअ़तो ख़ुराफ़ात से खबरदार करते हुए रक़म तराज़ है कि :

"मुत्तअ़स्सिब ख़्वारजियों की बिदअत से बचो जो अ़ॅहले बैते अत्हार ﷺ की कद्‌ह (हज्व) करते है। जाहिलों की बिदअत से इज्तेनाब करो जो फासिद को फासिद से, बिदअत को बिदअत से, बुराई को बुराई से तकाबुल करते हैं की वो लोग (आ़शूरा के रोज़) ईन्तेहाई फरहत-व-सुरूर का ईज़हार करते हैं, ईद मनाते हैं, ज़ीनत की नुमाइश करते हैं। जैसे खिज़ाब, सूरमा और नए नए कपडे और फिज़ूल ख़र्ची, ख़िलाफे आदत (रंगबिरंगे) ख़ाने पकाने वगैराह में मशगुल होते हैं। और उनका ये ए'त्तेक़ाद है के ये सुन्नत से हैं और उमूरे आदिया में से हैं। **हालांकी ईन तमाम उमूर का तर्क करना ही सुन्नते नबवी है।** क्यूंके ईनमें कोई एक बात भी ऐसी नही जिस पर ए'तेमाद किया जा सके और ना ही कोई अषरे सहीह है के जिसकी तरफ रुजूअ किया जा सके।

दर हक़ीक़त बाज़ अइम्मए हदीष और फुकहाए किराम से आ़शूरा के दिन सूरमा लगाने, ग़ुस्ल करने, मेहंदी लगाने, ख़िचडा पकाने, नए लिबास पहनने, ख़ुशी व ईन्बेसात के ईज़हार करने के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया इस बारे में ना तो रसूलुल्लाह ﷺ से कोई रिवायत है और ना किसी सहाबी से और ना अइम्मए मुस्लिमिन से, ना अईम्मए अरबए अ़ॅहले सुन्नत और ना उनके अलावा और किसी ने मुस्तहब बताया। और ना किसी क़ाबिल ए'तेमाद कुतुबे हदीष में कोई रिवायत है ना सहीह ना ज़ईफ़।

और येह जो कहा जाता है के अगर आ़शूरा के दिन सूरमा लगाया गया तो उस साल में आंखें न दुख़ेंगी और ये के जिसने ग़ुस्ल किया वो साल भर बिमार न होगा और ये जिसने अपने ईयाल में रिज़्क़ की वुसअ़त की अल्लाह (ﷻ) सालभर रिज़्क में क़ुशादगी फरमाएगा, और इस किस्म की बातें और येह कि इस दिन नमाज़ अफ़ज़ल है और ये कें इस दिन हज़रत आदम ﷺ की तौबा कुबुल हुई। जुदी पहाडी पर

कश्ती कायम हुई । हज़रत ईब्राहीम عليه السلام को आग से नजात मीली । हज़रत इस्माईल عليه السلام के ज़ब्ह के वक्त दुम्बा का फिद्‌या और हज़रत याकूब عليه السلام के पास हजरत युसूफ عليه السلام वापस आए । ये सब मौज़ूअ़ हैं । **सिवाय हदीषे इयाल पर वुसअ़ते रिज़्क के लेकिन ईसकी सनद में कलाम है लिहाजा ख़ारजियों-नासबियों ने अपनी जहालत के सबब इस दिन को 'मौसिमुस्सुरुर' (ईद) बना लिया और राफ़ज़ियों ने मातम का दिन ।** हालांकी ये दोनों ख़ताकार और मुख़ालिफे सुन्नत हैं । इन सब को चंद हुफ्फाज़े हदीष ने ऐसा ही बयान किया है ।

बिला सुब्हा हाक़िम رحمة الله ने तशरीह की है के इस दिन सूरमा लगाना बिदअ़त है । दूसरी रिवायत में जो येह है के इस दिन जिसने सूरमा लगाया कभी उसकी आंख़ को आशोब ना होगा । इसके लिए भी कहा के मुन्कर है । इब्ने जौज़ी ने अपनी मौज़ूआ़त में हाक़िम رحمة الله की सनद से इसी मकाम पर बयान किया है और हाफ़िज़ोंने दुसरी सनदों से भी नक़्ल किया है ।

अलमज्दुल्लुगवीने हाकिम رحمة الله से नक़्ल किया है के रोज़ा के सिवा तमाम वोह हदीषे जो आ़शूरा की फज़ीलत और नमाज़, इन्फाक, ख़िज़ाब, तेल व सूरमा, ख़ाना पकाने की फज़ीलत में मन्कूल हैं, सब मौज़ूअ़ और सरासर बोहतान हैं ।

इसी तरह इब्ने कय्यिम رحمة الله ने तशरीह करते हुए कहा के सूरमा लगाने, तेल मलने और ख़ुश्बू लगाने की हदीष यौमे आशुरा के दिन के लिए कज़्ज़ाबों की मनघडत हदीषो में से हैं ।

(हेतमी फि अल सवाइक़ अल मुहर्रिक़ा, अला अहल अल रफ्द़ व अल दलाल व अल ज़नदकह, 02/534-536)

ग़ौर से पढें की इसमें बयान किया गया है के अ॓ह्‌ले बैते किराम عليهم السلام के दुश्मन "नासबी और ख़ारजीने "रोज़े आ़शूरा को ईद मनाना सुन्नत कहा है ।" मआ़ज़ल्लाह हालांकि इस पर कोई हदीषे रसूल है ना किसी सहाबीए रसूल का कोई अमल है और ना ही अईम्माए मुस्लिमिन या इनके ईलावा किसी और ने इसे जाइज़ व मुस्तहब बताया। मगर फिर भी ख़्रवारिज और नवासिब ने बुग्ज़े अ॓ह्‌ले बैत में इस कबिह फ़े'ल को सुन्नत बनाकर इन दिनों में ख़ुशीयां मनाने को अपना अकीदा बना लिया । नउज़ुबिल्लाह ! इससे मा'लुम होता है के **आज अगर कोई नासबी साले नौ की ख़ुशियां मनाने के लिए जवाज़ भी निकालता है तो हैरान होने की ज़रुरत नहि, क्यूंके जो बरतन में होता वोही बाहर आता है ।** जिनका अल्लाह عزوجل व रसूल صلى الله عليه وسلم पर

ईमान होगा और आपके अ‍ॅह्‌ले बैते अत्हार ﷺ से मुहब्बत मवद्दत होगी तो वो उनका ही तरीका अपनाएगा । उन्ही की सुन्नत को इख़्तियार करेगा, उन्ही के तरीके पर अपनी जिंदगी बसर करेगा ना के आपके दुश्मनों के तरीके पर चलकर अपनी दुनिया और आख़िरत को बरबाद करेगा ।

इसी तरह हाफ़िज़ अबूल फिदा इस्माइल बिन उमर इब्न कषीर अल-दिमश्की (अल मुत्तवफ्फा सन 733 हिजरी)ने भी बयान किया है की **शामी ख़्वारिज ने शीअ़ा रवाफ़िज़ की रद्दो मुख़ालेफत की आड में सय्यिदना इमाम हुसैन ؓ की शहादत को ईद का दिन बना दिया था ।** चुनान्चे शामी खारजियों के इस कबिह फे'ल के बारे में हाफ़िज़ इब्ने कषीर लिख़ते हैं कि :

"वोह यौमे आ़शूरा को दाने पकाते, गुस्ल करते, ख़ुश्बू लगाते और किंमती कपडे पेंहेंनते और उस दिन को ईद बना देते और उसमें तरह तरह के ख़ाने पकाते और ख़ुशी व मसर्रत का ईज़्हार करते और उस दिन इनका मकसद रवाफिद़ की मुख़ालिफत करना था ।'

(इब्ने कषीर फी अलबिदाया वन्निहाया 08/283)

इमामे अेहले सुन्नत शैखुल मुहक़्क़िक़ीन अश्शाह अब्दुल हक़्क़ मुहद्दिष अल बुख़ारी दिहलवी अल हनफ़ी رحمۃ اللہ علیہ का फतवा 'मा षबुत बिस्सुन्नाह फी अय्यामि वस्सना' से
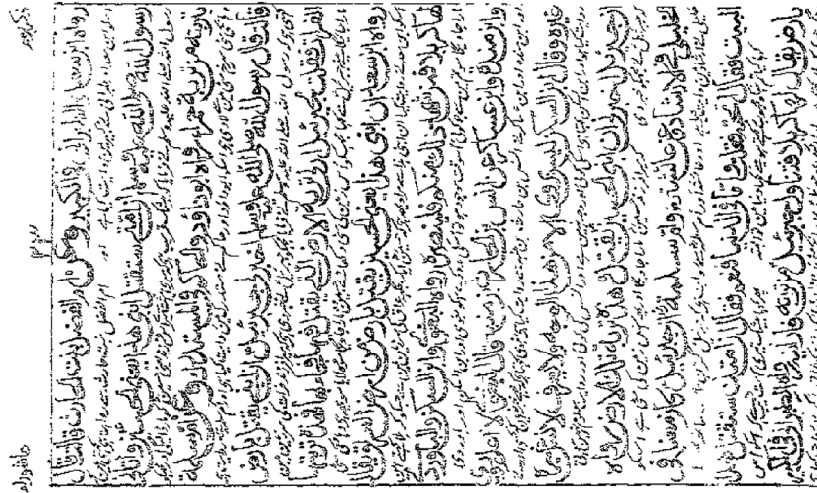
इमामे अ॓ह्ले सुन्नत, कुदवतुल मुहद्दिषीन सिराजुल आ़रिफ़ीन अश्शैखुल मुहक़्क़िक़ीन अश्शाह अ़ब्दुल हक़्क़ बिन सैफ़ुद्दीन बिन सअ्दुल्लाह अल बुख़ारी अल दिहलवी अल हनफ़ी (अल मुत्तवफ्फा : सन 1052 हिजरी) अपनी किताब **“मा षबुत बिस्सुन्नाह फी अय्यामि वस्सना”** मे आ़शूरा की मौज़ूअ़ अहादीष के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते है :

“शैख़ इमाम, हाफ़िज़, अल्लामा, आलिमे मदीना मुनव्वरह अपने ज़माने मे अश्शैख़ अ़ली बिन मुहम्मद बिन इ़राकी की किताब **‘तन्ज़िह अल शरीअ़ह फि अल अहादीष अल मव्दू’आह” में हदीष है के; “जिसने मुहर्रम के पहले नौ दिनों के रोज़े रखे उसके लिए अल्लाह ﷻ हवा में एक कुब्बा बनाएगा । जिसकी पैमाईश मील-दो मील होगी और उसके चार दरवाज़े होंगे ।”** इसे अबू नु’एम ﷺ ने हज़रत अनस ﷺ से रिवायत किया है के चूंके इस सनद मे मूसा तवील है, वोह एक आफत था (या’नी खुब घडा करता था) ।

और येह हदीष है के **जिसने आ़शूरा का रोज़ा रखा अल्लाह ﷻ उसके लिए सात साल की ईबादत लिख़ेगा जिसमें रोज़ा नमाज़ है, और जिसने आ़शूरा के दिन का रोज़ा रखा उसको दस हज़ार फरिश्तों का सवाब दिया जाएगा और जिसने आ़शूरा के दिन का रोज़ा रखा उसे एक हज़ार ह़ज्ज व उमराह का सवाब**

दिया जाएगा, जिसने आ़शूरा का रोज़ा रखा उसे 10,000 शहीदों का षवाब दिया जाएगा और जिसने आ़शूरा का रोज़ा रखा अल्लाह عزوجل उसके लिए सातों आसमानों का षवाब लिखेगा और जिसने आ़शूरा के दिन किसी भूखे को खाना खिलाया उसने गोया उम्मते मुहम्मदिय्या के तमाम फुकरा को खाना खिलाया और उनको सेर कर दिया, और जिसने यतीम के सर पर हाथ फेरा तो उसके सर के हर बाल के बदले जन्नत में बुलंद दर्जा मिलेगा ।

अल्लाह عزوجل ने आ़शूरा के दिन जिब्रईल عليه السلام को पैदा किया, और आ़शूरा ही के दिन फ़रिश्तों को पैदा किया, और आ़शूरा के दिन हज़रत आदम عليه السلام को पैदा किया और आ़शूरा के दिन हज़रत इब्राहिम عليه السلام पैदा हुए । और इसी दिन उनको आग से नजात मीली । इसी दिन इस्माइल عليه السلام का फ़िद्या आया और आ़शूरा ही के दिन फिरऔन गर्क हुआ । आ़शूरा के दिन ईदरीस عليه السلام को उठाया और यौमे आ़शूरा को हजरत आदम عليه السلام की तौबा क़ुबूल हुई और यौमे आ़शूरा को दाउद عليه السلام की लग़ज़ीस मु'आफ़ हुई । यौमे आ़शूरा को अल्लाह عزوجل अर्श पर मुस्तवी हुवा और यौमे आ़शूरा को कयामत काइम होगी ।"

येह सब (अहादीष) मौज़ूअ़ है । इसे इब्ने जौज़ी رحمة الله عليه ने हज़रत ईब्ने अब्बास رضي الله عنه से जिक्र किया है । चूंके इस सनद में हबीब इब्ने हबीब है जो फित्ना परदाज़ था ।

(इसी तरह) येह हदीष के बेशक अल्लाह عزوجل ने बनी इसराइल पर साल में एक दिन का रोज़ा फर्ज किया है वोह आ़शूरा का दिन है और मुहर्रम की दसवीं है । लिहाज़ा इस दिन रोज़ा रखो और अपने अह्ल पर रिज़्क की फराखी व कुशादगी करो क्यूंके जिसने अपने अह्ल पर अपने माल मे से यौमे आ़शूरा को वुस'अत की तो अल्लाह عزوجل उस पर सारा साल फराखी करेगा । रोजा रखो क्यूंके येह वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने हजरत आदमعليه السلام की तौबा कबूल की । ये वोह दिन है जिस दिन हज़रत ईदरीस عليه السلام को बुलंद मरतबा पर फाईज़ किया और येह वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने हज़रत इब्राहिम عليه السلام को आग से नजात दी और येह वोह दिन है जिस दिन हज़रत नूह عليه السلام को कश्ती से उतारा । ये वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने हज़रत मुसा عليه السلام पर तौरेत उतारी और येह के हज़रत इस्माइल عليه السلام का बा-वक्ते ज़ब्ह फ़िद्या उतारा और येह वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने

हज़रत युसूफ عليه السلام को जैलखाने से निकाला । येह वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने हज़रत याकूब عليه السلام को बसारत वापस फ़रमाई । येह वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने हज़रत अय्युब عليه السلام से बलाओं को दूर किया । येह वोह दिन है कि अल्लाह عزوجل ने हज़रत युनूस عليه السلام को मछली के पेट से निकाला । येह वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عزوجل ने बनी ईसराइल के लिए दरिया फाड़ा । येह वोह दिन है जिस दिन हुज़ूर रसूले अकरम صلى الله عليه وسلم के सबब अगलों और पिछलों के गुनाह बख़्शे । येह वोह दिन है जिस दिन हज़रत मुसा عليه السلام ने दरिया उबूर किया । येही वोह दिन है जिस दिन हज़रत युनूस عليه السلام की कौम पर तौबा उतारी । पस जो शख़्स इस दिन का रोज़ा रख्रेगा चालीस साल का कफ़्फ़ारा होगा और येह वोह पहला दिन है के अल्लाह عزوجل ने **दुनिया को यौमे आ़शूरा के दिन पैदा किया** और येह वोह पहला दिन है के आसमान से बारीश उतारी । पस जिसने आ़शूरा का रोजा रखा गोया तमाम ज़माने का रोज़ा रखा, और येह अम्बिया और मुसा عليه السلام का रोज़ा है । जिसने शबे आ़शूरा को शब बेदारी की गोया उसने सातों आसमान वालों की बराबर अल्लाह عزوجل की इबादत की । जिसने चार रक'अत नमाज़ पढी जिसकी हर रकअत में अलहम्द **1** बार और कुलहुवल्लाहु अहद **50** बार पढी तो अल्लाह عزوجل उसके गुज़स्ता **50** और आईन्दा के **50** साल के गुनाह बख़्श देगा । अल्लाह عزوجل उसके लिए मलए आ'ला में नूर के एक हज़ार मिम्बर बनायेगा और जिसने एक घूंट पानी पिलाया गोया की उसने एक आन भी अल्लाह عزوجل की नाफ़रमानी नहीं की । जिसने अॅहले बैत عليهم السلام के मिस्कीनों का पेट आ़शूरा के दिन भरा तो वोह सिरात पर चमकती बिजली की तरह गुज़र जाएगा और जिसने कोइ चीज़ ख़ैरात की गोया उसने कभी किसी साईल को नहीं लौटाया और जिसने यौमे आ़शूरा को गुस्ल किया सिवाए मरज़े मौत के कभी बिमार न होगा । जिसने इस दिन सूरमा लगाया सालभर तक उसकी आंखें आशोब न करेंगी, जिसने किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा गोया उसने तमाम औलादे आदम के यतीमों के साथ भलाई की । जिसने किसी मरीज़ की इयादत की गोया उसने तमाम औलादे आदम के मरीज़ो की ईयादत की । इन सबको इब्ने जौज़ी رحمة الله عليه ने 'मौज़ूआ़त' में बयान किया है ।"

(अ़ब्दुल हक़्क़ मुहद्दिष दिहलवी फी 'मा षबुत बिस्सुन्नाह फी अय्यामिस्सन्ना' :19-22)

यौमे आ़शूरा को अह्ल व अयाल पर खाने पीने में वुसअ़त इख़्तियार करने से मुतअल्लिक़ हदीष

बा'ज़ रिवायतों से ये मशहूर है के यौमे आ़शूरा को अह्ल व अयाल पर खाने पीने में वुसअ़त इख़्तियार करने से पूरा साल बरक़त रहेती है । इस हदीष की तॅहक़ीक़ व तख़रीज़ में **'अल्लामा ख़ुसरो क़ासिम साहब'** ने एक रिसाला लिखा है :

"यौमे आ़शूरा को अह्ल व अयाल पर खाने पीने में वुस्अत इख़्तियार करने के मुतअल्लिक हदीष की (तॅहक़ीक व तख़रीज़)"

हमने इसी रिसाले से नक़्ल करके मुहद्दिषीन के इस हदीष की सिह़त परकलाम को बिलकुल शॉर्ट में नक़्ल किया है जिससे लोगों पर वाज़ेह हो जाए के अॅह्ले सुन्नत के मुहद्दिषीन का बड़ा गिरोह इस हदीष को ज़ईफ़ या मौज़ूअ़ करार देता है ।

यौमे आ़शूरा की फ़ज़ीलत से मुतअल्लिक़ एक हदीष उन अल्फ़ाज़ के साथ बा'ज़ कुतुबे अहादीष में मिलती है ।

"من وسع علی عیالہ یوم عاشوراء وسع اللہ علیہ سائر سنتہ".

"जिसने आ़शूरा (माहे मुहर्रम की दसवीं तारीख़) को अपने अॅह्ल व अयाल के लिये खाने पीने में वुसअ़त इख़्तियार की अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे फ़राख़ी और वुसअ़त में रखेगा ।"

इस हदीष की तॅहक़ीक़ व तख़रीज अल्लामा ख़ुसरो क़ासिम साहब के रिसाले से यहां पेश कर रहे हैं :

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक़ले किताब	हदीष की सिह्त पर मुहद्दिष का कलाम
1.	इमाम अबू जा'फर मुहम्मद बिन उमर बिन मूसा बिन हम्मादि अल मक्की अकीली अल मक्की	322 हि.	सय्यिदना अबू हुरैरा	अल इल्लुल मुतनाहीय्या (जिल्द - 2 / 553)	• यह रिवायत ग़ैर महफ़ूज़ है, यह बात रसूलुल्लाह से किसी सहीह हदीष से साबित नहीं है।
2.	अबू अहमद अब्दुल्लाह इब्ने अदी इब्ने अल क़त्तानी अल जुरजानी	365 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद	अल कामिल फ़ी ज़्ज़ुअ़फाईरिजाल (6 / 361)	• मुजे नहीं मालूम के इस सनद से यह रिवायत अ़ली बिन अबी तालिब बज़्ज़ाज़ कर्शी के अलावा किसी दूसरे ने भी रिवायत की है।
3.	इमाम अबूल हसन अ़ली इब्ने उ़मर इब्ने अहमद इब्ने महदी इब्ने मसऊद इब्ने नु'मान इब्ने दिनार इब्ने अब्दुल्लाह अल बग़दादी अद्दारुलकुत्नी	385 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने उ़मर	अतराफ़ुल ग़राईब वल अफ़राद मिन हदीष रसूलुल्लाह लिल इमाम दारक़ुत्नी (जिल्द - 3 / 370)	• ये हदीष मुन्किर है और ज़हरी की हदीष में से है।
4.	इमाम अबूल फज़ल अहमद इब्ने हजर अस्क़लानी	752 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने उ़मर	लिसानुल मिज़ान (जिल्द - 8 / 530)	• इसको (हदीष के रावी मुहम्मद बिन इस्माइल जाफरी को) इमाम अबू हातिम ने मुन्किरुल हदीष और इमाम अबू नु'एम अस्फहानीने मतरुक कहा है।

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नकले किताब	हदीष की सिह्हत पर मुहद्दिष का कलाम
5.	अबूबक्र अहमद इब्ने हुसैन इब्ने अ़ली इब्ने मूसा अल बैहक़ी	458 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद	शुएबुल ईमान (जिल्द - 3/1390)	• इस रिवायत को बयान करने में 'हैसम' (हदीष का एक रावी) मुन्फरिद है और इसके अन्दर हदीष के सिलसिले में कुव्वत पाई जाती है ।
6.	मुहम्मद इब्ने अलहादी	----	----	रिसालते लतीफा (P. 49)	• इस की कोई सनद नहीं है या इसकी अगर सनद है भी तो ऐसी सनद से नाक़िदीन हदीषे हुज्जत नहीं पकडते ।
7.	शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने उषमान इब्ने क़ैमज़ इब्ने अब्दुल्लाह अत्तुर्कमानी अल फ़ारिक़ी दिमश्की अज़्ज़हबी (इमाम ज़हबी)	ई. सन 1348	सय्यिदना अबू हूरैरा	तारीख़ुल इस्लाम (9-265)	• इस की सनद में सुलेमान बिन अबी अब्दुल्लाह है जो ग़ैर मारूफ़ है ।
8.	नूरुद्दीन अबूल हसन अ़ली इब्ने सुल्तान मुहम्मद अल हिरावी अल क़ारी (मुल्ला अ़ली क़ारी)	1014 हि.	सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी	अल असरारुल मरफ़ूआ़ (452)	• हदीष ज़ईफ़

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक्ले किताब	हदीष की सिहत पर मुहद्दिष का कलाम
9.	अब्दुल बाक़ी ज़ुरकानी	1099 हि.	सय्यिदना इब्ने मसउ़द, अबू सईद ख़ुदरी, जाबिर अन्सारी, अबू हुरैरा	मुख़्तसरुल मक़ासिद (इमाम जुन्दी की 'मुख़्तसर' की शरह) (1092)	• **हदीष सहीह**
10.	मुहम्मद जारुल्लाह सअदी	----	सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी	अन्नवाफ़िऊल इतरा (410)	• **हदीष ज़ईफ़**
11.	शैख़ मुहम्मद नासिरुद्दीन अलबानी	सन 1999	सय्यिदना अबू हुरैरा, अबू सईद ख़ुदरी, अब्दुल्लाह बिन मसउ़द, हज़रत जाबीर	अस्सिलसिलतुज़्ज़इफा (6824)	• **हदीष ज़ईफ़**
12.	इमाम अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन उमर बिन मूसा बिन हम्मादि अल अकीली अल मक्की	322 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने मसउ़द	अज़्ज़ुअफाऊल कबीर (जिल्द-3 / 252)	• **इस सिलसिले में मुरसल रिवायत के सिवा कुछ साबित नहीं है ।**
13.	इब्ने कैसरानी	----	----	मअ्रिफतुत्तज़किरा (237)	• **इस रिवायत की सनद में "हैसम बिन शदाख़" है जो इमाम अअमश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है इससे हुब्जत नही ली जा सकती ।**

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक़ले किताब	हदीष की सिहत पर मुहद्दिष का कलाम
14.	इमाम शम्सुद्दीन जहबी	ई. सन 1348	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने उमर	तल्ख़ीसुल इललिल मुतनाहिय्या (181)	• **यह बातिल है । इसी जैसी और अहादीष भी रिवायत की गई है, लेकिन वह भी सहीह नहीं है ।**
15.	शिहाबुद्दीन अबूल अब्बास अहमद इब्ने मुहम्मद इब्ने अ़ली इब्ने हजर अल हैतमी अल मक्की अल अन्सारी (इब्ने हजर अल हैतमी)	909 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द	मजमऊज्जवाइद (जिल्द - 3/192)	• **इसकी सनद में "हैसम बिन शदाख़" नाम का रावी बहुत ज़ियादा ज़ईफ़ है ।**
16.	अब्दुर्रहमान इब्ने अ़ली इब्ने मुहम्मद अबूल फ़राश इब्ने जौज़ी	597 हि.	सय्यिदना अबू हुरैरा	मौजूआत लि इब्निल जौज़ी (जिल्द - 2/568)	• **कोई अक़लमन्द इन्सान इस रिवायत के मौजूअ़ होने में शक नहीं कर सकता ।**
17.	इमाम अहमद इब्ने हम्बल	241 हि.	----	मसाइले अहमद रिवायते इस्हाक़ (जिल्द - 1/136)	• **इसकी सनद में ज़ुअफ़ है ।**
18.	शिहाबुद्दीन अबूल फज़्ल अहमद इब्ने नूरुद्दीन अ़ली इब्ने मुहम्मद इब्ने हजर अल अस्क़लानी	852 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द	अल अमालियुल मुतलका (28)	• **यह हदीष गरीब है, इसमें "हैसम बिन शदाख़" नाम का रावी है जिसके ज़इफ़ होने पर सबका इत्तिफ़ाक़ है ।**

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नकले किताब	हदीष की सिहत पर मुहद्दिष का कलाम
19.	मुल्ला अली क़ारी	1014 हि.	----	अल असरारुल मरफ़ूआ (345)	• इस हदीष के बारे में कहा जाता है के इसकी कोई अस्ल नहीं या यह अस्ल में मौज़ूअ़ है ।
20.	अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी	ई. सन 1999	----	तख़रीज मिश्कातुल मसाबीह (1868)	• यह हदीष अपनी तमाम सनदो के साथ ज़ईफ़ है, इब्ने तैमिया ने इस पर मौज़ूअ़ होने का हुक्म लगाया है और उन्होंने कोई अनोखी बात नहीं कही है ।
21.	अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी	ई. सन 1999	सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी	ज़ईफ़ूल जामेअ (5873)	• हदीष ज़ईफ़
22.	अब्दुर्रहमान इब्ने अ़ली इब्ने मुहम्मद अबूल फराश इब्ने जौज़ी	597 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसउद	मौज़ूआ़त लि इब्निल जौज़ी (जिल्द - 2/572)	• हदीष मौज़ूअ़
23.	इब्ने तैमिया (तक़ीउद्दीन अहमद इब्ने तैमिया)	661 हि.	----	मिन्हाजुस्सुन्नाह (जिल्द - 8/149)	• यह हदीष नबी ﷺ पर एक जूठ़ है ।
24.	इब्ने तैमिया (तक़ीउद्दीन अहमद इब्ने तैमिया)	661 हि.	----	मजमउल फतावा (25/300)	• यह हदीष मौज़ूअ़ है और नबी ﷺ पर जूठ़ है ।

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक़्ले किताब	हदीष की सिह्हत पर मुहद्दिष का कलाम
25.	ज़ैनुद्दीन अबूल फराज़, अब्दुर्रहमान इब्ने अहमद इब्ने अब्दुर्रहमान इब्ने अल हसन इब्ने मुहम्मद इब्ने अबी अल बरकात मसउद अस्सुलामी अल बग़दादी अल हम्बली (इब्ने रजब)	795 हि.	----	लताइफुलमा'रिफ फिमा लि मवासिमुलआम मिनल वज़ाइफ (112)	• यह हदीष कई एक सनदों से बयान की जाती है लेकिन इनमें से कोई एक भी सहीह नहीं है । हज़रत उ़मर के क़ौल के तौर पर भी इसको नक़्ल किया गया है लेकिन इस सनद में मजहूल और गैर मारूफ़ रावी मौजूद है ।
26.	शिहाबुद्दीन अबूल अब्बास अहमद इब्ने मुहम्मद इब्ने अ़ली इब्ने हजर अल हैतमी अल मक्की अल अन्सारी (इब्ने हजर अल हैतमी)	909 हि.	सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी	मजमऊज्जवाइद (जिल्द - 3/192)	• इस हदीष की सनद में मुहम्मद बिन इस्माइल जाफ़री है जिसे अबू हातिमने मुन्किरुल हदीष कहा है ।
27.	शिहाबुद्दीन अबूल फज़ल अहमद इब्ने नूरुद्दीन अ़ली इब्ने मुहम्मद इब्ने हजर अल अस्क़लानी	852 हि.	सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह	लिसानुल मीज़ान (जिल्द - 3/338)	• हदीष सख़्त मुन्कर है

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक्ले किताब	हदीष की सिहत पर मुहद्दिष का कलाम
28.	शिहाबुद्दीन अबूल फज़ल अहमद इब्ने नूरुद्दीन अली इब्ने मुहम्मद इब्ने हजर अल अस्क़लानी	852 हि.	सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी	अल अमालियुल मुतलका (28)	• इसकी सनद में अब्दुल्लाह बिन सलमा रबई है जिसे अबू ज़रआ ने ज़ईफ़ कहा है, इसमें दूसरा रावी मुहम्मद जाफ़री है जिसे अबू हातिम ने ज़ईफ़ कहा है । इस हदीष के कई एक शवाहिद है ।
29.	अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी	सन 1999	सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह	तमामुल मिन्नाह (410)	• इसकी सनद मौज़ूअ़ है ।
30.	अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी	सन 1999	सय्यिदना सईद ख़ुदरी	इसलाहुल मसाजिद (166)	• यह हदीष सहीह नहीं है ।
31.	अबू अहमद अब्दुल्लाह इब्ने अदी इब्ने अल क़त्तानी अल जुरजानी	365 हि.	सय्यिदना अबू हुरैरा	अल कामिल फ़ी ज़ुअफाईरिजाल (7 / 416)	• इसकी सनदमें मुहम्मद बिन ज़कवान है जिसकी आम रिवायात मुन्फ़रिद और गरीब है, लेकिन इसके ज़ईफ़ होने के बावजूद इसकी अहादीष लिखी जाती है ।
32.	शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने उषमान इब्ने क़ैमज़ इब्ने अब्दुल्लाह अल तुर्कुमानी अल फ़ारिक़ी अल दिमश्क़ी अल ज़हबी (इमाम ज़हबी)	ई. सन 1348	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर	मीज़ानुल ए'तिदाल (जिल्द-4 / 312)	• यह हदीष बातिल है ।

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नकले किताब	हदीष की सिह्त पर मुहद्दिष का कलाम
33.	शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने उषमान इब्ने क़य्यिम इब्ने अब्दुल्लाह अल तुर्कुमानी अल फ़ारिक़ी अल दिमश्की अल ज़हबी (इमाम ज़हबी ﷬)	ई. सन 1348	सय्यिदना अबू हुरैरा ﷜	मीज़ानुल ए'तिदाल (93/543)	• **"इसकी सनदमें 'मुहम्मद बिन जक़्वान' नाम का रावी है" इसके बाद उन्होंने उन हज़रात का ज़िक्र किया है जिन्हों ने इस पर जर्रह की है और यह भी लिखा है के सनद में 'सुलेमान बिन अबी अब्दुल्लाह' नाम का रावी ग़ैर मारूफ़ है ।**
34.	अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी	सन 1999	सय्यिदना अबू हुरैरा ﷜	ज़ईफुत्तरगीब (617)	• **यह हदीष ज़ईफ़ है ।**
35.	इमाम अबू जा'फर मुहम्मद बिन उमर बिन मूसा बिन हम्मादि अल अकीली अल मक्की ﷬	322 हि.	सय्यिदना अबू हुरैरा ﷜	अज़्ज़ुअफाऊल कबीर (4/65)	• **यह हदीष महफ़ूज़ नही है ।**
36.	इमाम अबू जा'फर मुहम्मद बिन उमर बिन मूसा बिन हम्मादि अल अकीली अल मक्की ﷬	322 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷜	लिसानुल मीज़ान (8/366)	• **यह हदीष ग़ैर महफ़ूज़ है ।**

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक़्ले किताब	हदीष की सिह्हत पर मुहद्दिष का कलाम
37.	इमाम तबरानी (अबूल क़ासिम सुलेमान इब्ने अय्यूब इब्ने मुताय्यिरुल लख़मी अल तबरानी ﷬)	360 हि.	सय्यिदना अबू हुरैरा ﷠	अलमुअ्जमुल औसत (9/120)	• यह हदीष अबू सईद ख़ुदरी ﷠ से सिर्फ इसी सनद से रिवायत की जाती है । इस सनद में मुहम्मद बिन जाफ़री नाम का रावी मुन्फ़रिद है ।
38.	इब्ने कैसरानी ﷬	----	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷠	तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ (362)	• इसकी सनद में 'हैसम बिन शदाख़' नाम का रावी है जो अअमश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है, इस से हुज्जत लेना जाइज़ नहीं है ।
39.	शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने उषमान इब्ने क़ैमज़ इब्ने अब्दुल्लाह अल तुर्कुमानी अल फ़ारिक़ी अल दिमश्की अल ज़हबी (इमाम ज़हबी ﷬)	ई. सन 1348	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷠	मिज़ानुल ए'तिदाल (4/326)	• इसकी सनद में 'हैसम बिन शदाख़' नाम का रावी है जो अअमश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है, इस से हुज्जत लेना जाइज नहीं है ।

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नकले किताब	हदीष की सिहत पर मुहद्दिष का कलाम
40.	शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने उषमान इब्ने क़य्यिम इब्ने अब्दुल्लाह अल तुर्कुमानी अल फ़ारिक़ी दिमश्की ज़हबी (इमाम ज़हबी ﷫)	ई. सन 1348	----	तरतीबुल मौज़ूआत (182)	• इसकी सनद में 'हैसम बिन शदाख़' साकितुल ए'तिबार (मुसीबत में डालनेवाला) है ।
41.	शैख़ अब्दुल अज़ीज़ इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने बाज ﷫	ई. सन 1999	----	अत्तुहफतुलकरीमा (स. 94)	• यह रिवायत कई एक सनदों से नक़्ल की गई है लेकिन कोई एक भी सहीह नही है । सय्यिदना उमर ﷺ के क़ौल के तौर पर भी इसको नक़्ल किया गया है लेकिन इसकी सनद में मजहूल रावी है जो ग़ैर मारुफ है ।
42.	शैख़ अब्दुल अज़ीज़ इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने बाज ﷫	ई. सन 1999	सय्यिदना इब्ने अब्दुल्लाह ﷺ	मजमूआ फ़तावा इब्ने बाज़ (26/251)	• हदीष मौज़ूअ़ है ।
43.	अबू हातिम मुहम्मद इब्ने फैसल अल तमिमियुल दारमी अल बुस्ती (इमाम इब्ने हिब्बान ﷫)	354 हि.	सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसउ़द ﷺ	-----	• 'हैसम बिन शदाख़' शुअबाए अअमश से वाही तबाही रिवायत बयान करता है, इससे हुज्जत लेना जाइज़ नहीं है ।

	मुहद्दिष	मुतवफ़्फ़ा	रावी सहाबा	नक़्ले किताब	हदीष की सिह्हत पर मुहद्दिष का कलाम
44.	शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने उषमान इब्ने क़य्यिम इब्ने अब्दुल्लाह अल तुर्कुमानी अल फ़ारिक़ी दिमश्क़ी ज़हबी (इमाम ज़हबी رحمة الله)	ई. सन 1348	----	तरतीबुल मौज़ूआत (स. 182)	• अल्लाह تعالى इस रिवायत को घड़नेवाले का बुरा करे, किस क़दर जहालत भरी बातें की है ।

हदीषे मौज़ूअ़ की ता'रीफ़

आ़शूरा के फ़ज़ाईल में बयान की जानेवाली मौज़ूअ़ अहादीष को जानने से पेहले हमें ये जानना जरुरी है कि हदीषे मौज़ूअ़ कहते किसे है और उसका हुक्म क्या है, चुनान्चे मुल्ला अ़ली कारी लिखते हैं :

'मौज़ूअ़ वो हदीष है जिसमे किज़्ब रावी की वजह से ता'न हो ।'

(कारी फी शरह नुख़बतुलफिक्र-123)

हाफ़िज़ इब्ने अल सलाह رحمه الله लिखते है :

जो झूठी बात घड़कर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ मन्सूब कर दी गई हो उसको हदीषे मौज़ूअ़ केहते हैं ।

(इब्न अल सलाह फी उलूमुलहदीष-89)

हदीष घड़नेवाली जमा'अत

زكريا بن يحيى ابو يحيى — الجزء الرابع — (١٧٦)

عن الورثي، عن مجالد (١) الحديث إلى رسول الله ﷺ، فذكر هذه القصة.

قال ابن عدي: وأبو يحيى الوقار قال: سمعت مشايخ أهل مصر يثنون عليه في باب العبادة، والاجتهاد، والفضل، وله حديث كثير بعضها مستقيمة، وبعضها ما ذكرت، وغير ما ذكرت موضوعات، وكان يتهم الوقار بوضعها، لأنه يروي عن قوم ثقات أحاديث موضوعات، والصالحون قد رسموا بهذا الرسم أن يرووا في فضائل الأعمال أحاديث موضوعة بواطيل، ويتهم جماعة منهم بوضعها.

١ - في ل: مجالد نع.

अल इमाम अल हाफ़िज़ अबू अहमद इब्ने अदी अल जुरजानी (मुतवफ़्फ़ा सन 365 हिजरी) फ़रमाते है :

"और नामनिहाद सालिहीन ने येह रस्म ड़ाल दी है के वोह फ़ज़ाइले आ'माल में घड़ी हुई बातिल रिवायात बयान करते हैं, और एक जमा'अत तो उनमें से हदीष घड़ने में भी मुलव्विस है ।"

(ईब्ने अदी फ़ी ज्जुअफ़ाईर्रिजाल-04/176)

علوم الحديث لابن الصلاح

الإمام أبو عمرو عثمان بن عبد الرحمن الشهرزوري

المتوفى سنة ٦٤٣ هـ

رحمه الله تعالى

تحقيق وشرح

نور الدين عتر

أستاذ التفسير وعلوم القرآن والحديث وعلومه في كلية الشريعة جامعة دمشق

دار الفكر

بخلاف غيره من الأحاديث الضعيفة التي يُحتمل صدقها في الباطن، حيث جاز روايتها في الترغيب والترهيب على ما نبيّنه قريباً إن شاء الله تعالى[١].

وإنما يعرف كون الحديث موضوعاً بإقرار واضعه أو ما يتنزل منزلة إقراره، وقد يفهمون الوضع من قرينة حال الراوي أو المروي، فقد وضعت أحاديث طويلة يشهد بوضعها ركاكة ألفاظها ومعانيها.

ولقد أكثر الذي جمع في هذا العصر (الموضوعات) في نحو مجلدين فأودع فيها كثيراً مما لا دليل على وضعه[٢]، وإنما[٣] حقه أن يذكر في مطلق الأحاديث الضعيفة.

والواضعون للحديث أصناف، وأعظمهم ضرراً قوم من المنسوبين إلى الزهد وضعوا الحديث احتساباً فيما زعموا فتقبل الناس موضوعاتهم ثقة منهم بهم وركوناً إليهم. ثم نهضت جهابذة الحديث بكشف[٤] عوارها ومحو عارها والحمد لله.

(١) في ص ١٠٣.

(٢) مراده الحافظ أبا الفرج عبد الرحمن بن الجوزي مؤلف كتاب (الموضوعات) فقد تساهل فأدخل في كتابه ما لا دليل على وضعه، بل هو ضعيف، بل وفيه الحسن بل وفيه الصحيح أيضاً، وقد بين ذلك السيوطي في كتابه (اللآلئ المصنوعة)، وهو كتاب جيد في هذا الباب، وانظر كتاب (تنزيه الشريعة المرفوعة) لابن عراق، فإنه أوفى كتب هذا النوع.

(٣) ط: ع و ق (وإنما).

(٤) ط: ع (لكشف).

٩٠

और मुहद्दिषीने किराम के नज़दीक़ हदीष घड़नेवालों में सबसे ज़ियादा मुहलिक व नुकसानदेह लोग यही है जो खुद को सूफ़िया, सुलहा, वली और पीर कहलवाते हैं । चुनान्चे ऐसे नामनिहाद सूफिया और पीरों के बारे में मुहद्दिषीने किराम फ़रमाते हैं : “घड़नेवाले लोगों की कई इक़साम है और उनमें सबसे ज़ियादा मुज़िर वोह कौम है जो ज़ुहद व इबादत की तरफ़ मन्सूब है, उन्हों ने अपने गुमान में सवाब समज़कर अहादीष घड़ी और लोगों ने उन पर ए’तिमाद करते हुवे वोह अहादीष कबूल कर ली ।”

(इब्ने सलाह फी अलूमुलहदीष-99) (नववी फी अत्तकरीब वत्तबसीर-47) (सुयूती फी तदरीबिर्रावी-01/434) (अन्नासी फी अल शाज़ाउल फय्या-223) (इब्ने इराक़ फी तन्ज़ीहिश्शरीआ-01/15)

हदीषे मौज़ूअ़ का हुक्म

इमाम मौलाए काएनात अ़ली इब्ने अबी तालिब ﷺ का क़ौल :

सय्यिदना मौला अ़ली ﷺ बयान फ़रमाते है के हुज़ूर नबीय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया : **“मेरी तरफ झूठी बात मन्सूब न करो । यक़ीनन जिसने मुझ पर झूठ बांधा वो जहन्नम मे दाख़िल होगा ।”**

(बुख़ारी फी अल सहीह-39 रक़म-106)

इमाम जुवयनी ﷺ का फ़तवा :

شرح اردو

شرح نخبة الفکر

تالیف

علامہ ابن حجر عسقلانی رحمہ اللہ

جمع وترتیب

محمد عمر انور

زمزم پبلشرز

شرح نخبۃ الفکر ۱۰۰
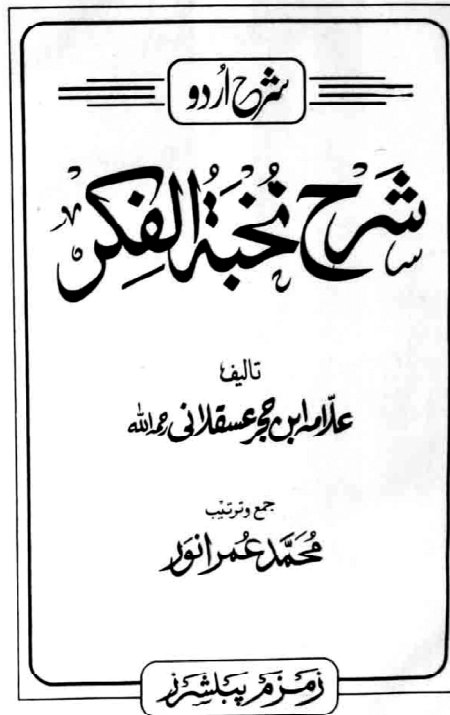
وضع کے طریقے واسباب

۱- پھر موضوع کو کبھی خود واضع تراش لیتا ہے

۲- اور کبھی وہ سلف صالح یا علمائے متقدمین کے کلام یا بنی اسرائیل کے قصص سے ماخوذ ہوتی ہے۔

۳- کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ ایک ضعیف حدیث کو صحیح اسناد کے ساتھ جوڑ کر رواج دیا جاتا ہے۔

۴- باعث وضع کبھی بے دینی ہوتی ہے جیسے زندیقوں میں۔

۴- اور کبھی غلبۂ جہالت ہوتا ہے، جیسے متصوفہ میں۔

۵- اور کبھی شدت تعصب ہوتا ہے جیسے بعض مقلدین میں

۶- اور کبھی بعض رؤسا کی خواہش کی پیروی ہوتی ہے

۷- اور کبھی ندرت پسندی بغرض شہرت۔

وكل ذلك حرام باجماع من يعتد به ، الا ان بعض الكرامية وبعض المتصوفة نقل عنهم اباحة الوضع في الترغيب والترهيب، وهو خطأ من فاعله ، نشأ عن جهل ؛ لان الترغيب والترهيب من جملة الاحكام الشرعية .

واتفقوا على ان تعمد الكذب على النبي ﷺ من الكبائر ، وبالغ ابو محمد الجويني فكفر من تعمد الكذب على النبي .

واتفقوا على تحريم رواية الموضوع الا مقرونا ببيانه ؛ لقوله ﷺ : "من حدث عني بحديث يرى انه كذب ؛ فهو احد الكاذبين" اخرجه مسلم .

وضع کا حکم

یہ سب کے سب باجماع علمائے معتدین حرام ہے، گو بعض کرامیہ اور متصوفہ سے بغرض ترغیب وترہیب اباحت وضع منقول ہے مگر یہ ان کی غلطی ہے جو جہالت کا نتیجہ ہے، اس

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्कलानी ﵀ लिखते हैं के इस पर इत्तेफाक है के नबी ﷺ पर अम्दन (जान बूझकर) झूठ बोलना गुनाहे कबीरा है और **अबू मुहम्मद जुवयनी ﵀ ने कहा :**

“वो शख़्स काफिर है जो नबी ﷺ पर अम्दन झूठ बांधे और इस पर भी इत्तेफाक है के मौज़ूअ़ रिवायत को बयान करना हराम है । हां येह केह कर बयान कर सकता है के ये हदीष मौज़ूअ़ है क्यूंके इमाम मुस्लिम ﵀ ने रिवायत किया है के नबी ﷺ ने फरमाया : **“जिसने मेरी तरफ ऐसी बात की निस्बत की जो मैं नें नहीं कही है तो वोह भी जूठ बोलनेवालों में से एक जूठा है ।”**

(ईब्ने हजर अस्कलानी फी शरह नुख़बतुल फिकर-**06**)

इमाम जलालुद्दीन सुयूती رحمه الله का मौज़ूअ़ अहादीष पर फ़तवा

ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ इमाम जलालुद्दीन सुयूती رحمه الله (मुतवफ़्फ़ा : 911 हिजरी) फ़रमाते है :

“अगरचे येह ऐसा कलाम है जिसमें हुस्न मौजूद है और उसकी नसीहतें बोहत बलीग हैं ता हम किसी शख़्स को ला'इक नहीं के वोह कलाम को अच्छा बनाकर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ कोई हर्फ़ मन्सूब करें, अगरचे वोह कलाम फी-नफ़सिही हक़ हो । पस बिलाशुबाह रसूलुल्लाह ﷺ का हर फ़रमान हक़ है लेकिन हर हक़ बात रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान नहीं । इस मक़ाम में ख़ूब गौर किया जा'ए बेशक येह **क़दमों के फिसलने** और अकलों के गुमराह हो जाने का मक़ाम है और रसूलुल्लाह ﷺ ने सहीह हदीष में तन्बीह फ़रमाई है के, “मुज़ पर जूठ़ बांधना किसी आम शख़्स पर जूठ़ बांधने की तरह नही, सो जिस शख़्स ने मुज़ पर जानबूज़ कर जूठ़ बांधा वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले ।”

(सुयूती फी अहादीषे मौज़ूआ़ -202)

मौज़ूअ़ अहादीष और
अल्लामा अहमद रज़ा बरेल्वी رحمۃ اللہ علیہ का फ़तवा

فتاوی رضویہ

جلد ۲۳

Page 1 of 768

Page 2 of 768

(جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں)

نام کتاب ____ فتاوی رضویہ جلد ۲۳
تصنیف ____ شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ
ترجمہ عربی عبارات ____ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور
پیش لفظ ____ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور
ترتیبِ فہرست ____ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور
تخریج و تصحیح ____ مولانا نظیر احمد سعیدی، مولانا محمد اکرم اللہ بٹ، مولانا غلام حسین
باہتمام و سرپرستی ____ مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی ناظم اعلٰی تنظیم المدارس اہلسنت، پاکستان
کتابت ____ محمد شریف گل، کڑیال کلاں (گوجرانوالا)
پیسٹنگ ____ مولانا محمد منشا تابش قصوری معلم شعبۂ فارسی جامعہ نظامیہ لاہور
صفحات ____ ۷۶۸
اشاعت ____ ذوالحجہ ۱۴۲۳ھ/فروری ۲۰۰۳ء
مطبع ____
ناشر ____ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور
قیمت ____

ملنے کے پتے

*رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور
۰۳۰۰/۹۴۱۵۳۰۰ ۷۶۶۵۷۷۲
*مکتبہ اہلسنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور
*ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور
*شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور

خوش آوازی کے چوکی پر مولود پڑھنے بٹھانا جائز ہے یا نہیں؟ اور ایسے آدمی سے رب العزت جل مجدہ اور روح حضور فخر عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی خوش ہوتی ہے یا ناخوش؟ اور پروردگار عالم ایسی مجالس سے خوش ہو کر رحمت نازل فرماتا ہے یا غضب؟ اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان محافل میں تشریف لاتے ہیں یا نہیں؟ بانیان اور حاضرین محافل کے مستحق رحمت ہیں یا غضب؟ بیّنوا من الکتاب توجروا عند رب الارباب (کتاب کے حوالے سے بیان فرماؤ تاکہ رب الارباب کے ہاں سے اجر و ثواب پاؤ۔ ت)

الجواب:

افعال مذکورہ سخت کبائر ہیں اور ان کا مرتکب اشد فاسق و فاجر مستحق عذاب یزداں و غضب رحمٰن اور دنیا میں مستوجب ہزاراں ذلت وہوان خوش آوازی خواہ کسی علت نفسانی کے باعث اسے منبر و مسند پر کہ حقیقۃً مسند حضور پرنور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہے تعظیماً بٹھانا اس سے مجلس مبارک پڑھوانا حرام ہے، تبیین الحقائق و فتح اللہ المعین و طحطاوی علی مراقی الفلاح وغیرہا میں ہے:

فی تقدیم الفاسق تعظیمہ وقد وجب علیھم اھانتہ شرعا[1]۔	فاسق کو آگے کرنے میں اس کی تعظیم ہے حالانکہ بوجہ فسق لوگوں پر شرعاً اس کی توہین کرنا واجب اور ضروری ہے۔ (ت)

روایات موضوعہ پڑھنا بھی حرام سننا بھی حرام، ایسی مجالس سے اللہ عزوجل اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کمال ناراض ہیں، ایسی مجالس اور ان کا پڑھنے والا اور اس حال سے آگاہی پاکر بھی حاضر ہونے والا سب مستحق غضب الٰہی ہیں یہ جتنے حاضرین ہیں سب وبال شدید میں جداجدا گرفتار ہیں اور ان سب کے وبال کے برابر اس پڑھنے والے پر وبال ہے اور خود اس کا اپنا گناہ اس پر علاوہ اور ان حاضرین و قاری سب کے برابر گناہ ایسی مجلس کے بانی پر ہے اور اپنا گناہ اس پر طرہ مثلاً ہزار حاضرین مذکور ہوں تو ان پر ہزار گنا اور اس کا عذاب قاری پر ایک ہزار ایک گنا اور بانی پر دو ہزار دو گنا ایک ہزار حاضرین کے اور ایک ہزار ایک اس قاری کے اور ایک خود اپنا، پھر یہ شمار ایک ہی بار نہ ہوگا بلکہ جس قدر روایات موضوعہ جس قدر کلمات نامشروعہ وہ قاری جاہل جری پڑھے گا ہر روایت ہر کلمہ پر یہ حساب وبال و عذاب تازہ ہوگا مثلاً فرض کیجئے کہ ایسے سو کلمات مردودہ اس مجلس میں اس نے پڑھے تو ان حاضرین میں ہر ایک پر سو سو گناہ اور اس قاری علم و دین سے عاری پر ایک لاکھ ایک سو گناہ اور بانی پر دو لاکھ دو سو، وقس علی ھذا، رسول اللہ

---

[1] فتح المعین کتاب الصلٰوۃ باب الامامۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۰۸، تبیین الحقائق باب الامامۃ المطبعۃ الکبرٰی بولاق مصر ۱/ ۱۳۴، غنیۃ المستملی فصل فی الامامۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۳

इसी तरह हज़रत अल्लामा अहमद रज़ा ख़ान हनफ़ी बरेल्वी ﷫ लिखते है:

“रसूलुल्लाह ﷺ की मुतवातिरा हदीष में है, “जो मुज़ पर दानीस्ता जूठ़ बांधे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले, अ॓ह्ले सुन्नत किसी कबीरा का इरतिकाब को कुफ़्र नहीं कहते जब तक इस्तिहलाल वग़ैरा मुकफ़्फ़िरात के साथ ना हो, मगर रसुलूल्लाह ﷺ पर इफ़तेरा को **इमाम अबू मुहम्मद जुवैनी वालिदे इमामुल हरमैन ने कुफ़्र बताया ।”**

(अहमद रज़ा ख़ान फी फ़तावा रिजवीय्या-**15/159**)

فتاوٰی رِضویّہ — جلد پانز دہم (۱۵)

فتاوٰی رِضویّہ

مع تخریج وترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہٗ

رضا فاؤنڈیشن

جامعہ نظامیہ رضویہ

اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸

پاکستان (۵۴۰۰۰)

Page 1 of 742

مَنْ یُّرِدِ اللہُ بِہٖ خَیْرًا یُّفَقِّھْہُ فِی الدِّیْنِ (الحدیث)

اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃ فِی الْفَتَاوٰی الرِّضْوِیَّۃِ

مع تخریج وترجمہ عربی عبارات

جلد پانزدہم (۱۵)

تحقیقات نادرہ پر مشتمل چودھویں صدی کا عظیم الشان
فقہی انسائیکلوپیڈیا

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز
۱۲۷۲ھ ــــــ ۱۳۴۰ھ
۱۸۵۶ء ــــــ ۱۹۲۱ء

رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ
اندرون لوہاری دروازہ، لاہور (۸)، پاکستان (۵۴۰۰۰)
فون: ۷۶۵۷۳۱۴

نام کتاب ـــــــــــ فتاوی رضویہ جلد پانزدہم
تصنیف ـــــــــــ شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ
ترجمہ عربی عبارات ـــــــــــ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور
پیش لفظ ـــــــــــ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور
ترتیبِ فہرست ـــــــــــ حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور
مقدمہ ـــــــــــ حضرت علامہ عبدالحکیم شرف قادری
تخریج و تصحیح ـــــــــــ مولانا نذیر احمد سعیدی، مولانا محمد اکرم اللہ بٹ
باہتمام وسرپرستی ـــــــــــ مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی ناظم اعلٰی تنظیم المدارس اہلسنّت، پاکستان
کتابت ـــــــــــ محمد شریف گل، کڑیال کلاں (گوجرانوالا)
پیسٹنگ ـــــــــــ مولانا محمد منشا تابش قصوری معلم شعبۂ فارسی جامعہ نظامیہ لاہور
صفحات ـــــــــــ ۷۴۴
اشاعت ـــــــــــ محرم الحرام ۱۴۲۰ھ / اپریل ۱۹۹۹ء
مطبع ـــــــــــ
ناشر ـــــــــــ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور
قیمت ـــــــــــ

ملنے کے پتے

*مکتبہ قادریہ، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور
*مکتبہ تنظیم المدارس، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور
*مکتبہ ضیائیہ، بوہڑ بازار، راولپنڈی
*ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور

एक और मक़ाम पर मौज़ूअ़ रिवायात पढने और सुननेवालों के बारे में आप ﷺ लिखते हैं :

“रिवायते मौज़ू’अ़ा पढना भी हराम और सुनना भी हराम, ऐसी मजालिस से अल्लाह ﷻ और हुज़ूरे अकदस ﷺ नाराज़ है, ऐसी मजालिस और उनका पढनेवाला और उस हाल से आगाही पा कर भी हाज़ीर होनेवाला सब मुस्तहिक़े गज़बे इलाही है । ये जितने हाज़िरीन है सब वबाले शदीद में जुदा-जुदा गिरिफ़्तार हैं और उन सबके वबाल के बराबर उस पढनेवाले पर वबाल है और ख़ुद उसका अपना गुनाह उस पर ‘इलावा’ और उन हाज़िरीन व कारी साब के बराबर गुनाह एसी मजलिस के बानी पर है, और अपना गुनाह ख़ुद उस पर तुर्राह । मस्लन हज़ार शख़्स हाजिरीने मज़कूर हो तो उन पर गुनाह और उस कज़्ज़ाब कारी पर एक हज़ार एक गुनाह, और बानी पर दो हज़ार दो गुनाह, एक हज़ार हाज़िरीन के और एक हज़ार उस कारी के और एक ख़ुद वोह कारी जाहिले जरी पढेगा, हर रिवायत, हर कलिमा पर येह हिसाबे वबाल व अज़ाब ताज़ा होगा । मस्लन फर्ज़ कीजिये के ऐसे सो कलिमाते मरदूदा उस मजलिस में पढे तो उन हाजिरीन में हर एक पर सो सो गुनाह और उस कारी इल्म व दीन से आड़ी पर एक लाख एक सो गुनाह और बानी पर दो लाख दो सो ।”

(अहमद रज़ा ख़ान की फ़तावा रिजवीया-23/735)

आ़शूरा के दिन रोज़ा रखना फर्ज़ या वाजिब नहीं है अलबत्ताा सुन्नत और मुस्तहब है

1. हज़रत उम्मुल मु'मिनीन हजरत आईशा ﷺ बयान करती है कि लोग रमज़ान के फर्ज किए जाने से पेंहले दस मुहर्रम के रोज़े रखते थे और येह वोह दिन था जिस दिन का'बा पर ग़िलाफ चढाया जाता था, फिर जब अल्लाह ﷻ ने रमज़ान के रोज़े फर्ज़ कर दिये तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो दस मुहर्रम का रोज़ा रखना चाहे वोह इस दिन का रोज़ा रख्खे और इसे तर्क करना चाहे तो उसे तर्क कर दे ।

(बुख़ारी फी सहीह-387 रकम-1592)

2. हज़रत सय्यिदा आईशा ﷺ ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने आ़शूरा के दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया था । फिर जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ कर दिये गए तो जो चाहता रोज़ा रखता और जो चाहता रोज़ा छोड देता ।

(बुख़ारी फी सहीह-480 रकम-2001)

3. हजरत आईशा ﷺ बयान करती है के कुरैश ज़मानए जाहिलिय्यत में आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते थे और रसूलुल्लाह ﷺ भी उस दिन रोज़ा रखते थे । फिर जब आप मदीना में आए तो आपने खुद भी इस दिन रोज़ा रख्खा और इस दिन रोज़ा रखने का हुक्म भी दिया । फिर जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ कर दिये गए तो आ़शूरा का रोज़ा तर्क कर दिया गया । पस जो चाहता उस दिन रोज़ा रखता और जो चाहता उसको तर्क कर देता ।

(बुख़ारी फी सहीह-480 रकम-2002)

4. अल्लामा अबू बकर बिन मसऊद्द कासानी हनफ़ी (अल मुतवफ्फा : सन 587 हिजरी) लिखते है कि, "बाज़ फुकहाने कहा है के सिर्फ आ़शूरा का रोज़ा रखना मकरूह है क्यूंके इसमें यहूद की मुशाबहत है ।"

(कासानी फी बदाईउस्सनाई-02/568)

5. अल्लामा सय्यिद मुहम्मद अमीन इब्ने आ़बिदीन शामी (अल मुतवफ्फा : सन 1252 हिजरी) लिखते है के "फतावा काज़ी ख़ान में मज़कूर है के यौमे आ़शूरा का रोज़ा मुस्तहब है जब के इसके एक रोज़ पॅहले या एक रोज़ बाद रोज़ा रख्ख़ा जाए ताकि ॲह्ले किताब की मुख़ालेफ़त हो ।"

(शामी फी रद्दुलमुहतार-03/330)

अल्लाह ﷻ से दुआ है के मुवाफिक़ीन के लिए इसे मूजिबें ईस्तेक़ामत बनाए और मुख़ालिफ़िन व मुतअ़स्सिबीन के लिए सबबे हिदायत बनाएं ।

आमीन बि जाही सय्यिदिल मुरसलीन ﷺ

Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahle Sunnat)

Modasa, Aravalli, Gujarat (India)
Mo. 85110 21786